श्रीः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

मुक्कूर् श्रीश्रीनिवास वरदाचार्य विरचितम्

॥ श्री-अष्टलक्ष्मीस्तोत्रम् ॥

This document has been prepared by*

Sunder Kidambi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness *śrīmad āṇḍavan* of *śrīraṅgam*

*This was typeset using LaTeX and the **skt** font.

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ श्री-अष्टलक्ष्मीस्तोत्रम् ॥

सुमनसवन्दित सुन्दरि माधवि चन्द्र सहोदरि हेममये
मुनिगणमण्डित मोक्षप्रदायिनि मञ्जुळभाषिणि वेदनुते।
पङ्कजवासिनि देवसुपूजित सद्गुणवर्षिणि शान्तियुते
जयजय हे मधुसूदन कामिनि आदिलक्ष्मि सदा पालय माम्॥ १ ॥

अयि कलिकल्मषनाशिनि कामिनि वैदिकरूपिणि वेदमये
क्षीरसमुद्भव मङ्गळरूपिणि मन्त्रनिवासिनि मन्त्रनुते।
मङ्गळदायिनि अम्बुजवासिनि देवगणाश्रित पादयुते
जयजय हे मधुसूदन कामिनि धान्यलक्ष्मि सदा पालय माम्॥ २ ॥

जयवरवर्णिनि वैष्णवि भार्गवि मन्त्रस्वरूपिणि मन्त्रमये
सुरगणपूजित शीघ्रफलप्रद ज्ञानविकासिनि शास्त्रनुते।
भवभयहारिणि पापविमोचनि साधुजनाश्रित पादयुते
जयजय हे मधुसूदन कामिनि धैर्यलक्ष्मि सदा पालय माम्॥ ३ ॥

जयजय दुर्गतिनाशिनि कामिनि सर्वफलप्रद शास्त्रमये
रथगज तुरगपदादि समावृत परिजनमण्डित लोकनुते।
हरिहर ब्रह्म सुपूजित सेवित तापनिवारिणि पादयुते
जयजय हे मधुसूदन कामिनि गजलक्ष्मि रूपेण पालय माम्॥ ४ ॥

अयि खगवाहिनि मोहिनि चक्रिणि रागविवर्धिनि ज्ञानमये
गुणगणवारिधि लोकहितैषिणि स्वरसप्त भूषित गाननुते।
सकल सुरासुर देवमुनीश्वर मानववन्दित पादयुते
जयजय हे मधुसूदन कामिनि सन्तानलक्ष्मि त्वं पालय माम्॥ ५ ॥

जय कमलासनि सद्गतिदायिनि ज्ञानविकासिनि गानमये
अनुदिनमर्चित कुङ्कुमधूसरभूषित वासित वाद्यनुते।

prapatti.com

कनकधरास्तुति वैभव वन्दित शङ्कर देशिक मान्य पदे
जयजय हे मधुसूदन कामिनि विजयलक्ष्मि सदा पालय माम्॥ ६ ॥

प्रणत सुरेश्वरि भारति भार्गवि शोकविनाशिनि रत्नमये
मणिमयभूषित कर्णविभूषण शान्तिसमावृत हास्यमुखे।
नवनिधिदायिनि कलिमलहारिणि कामित फलप्रद हस्तयुते
जयजय हे मधुसूदन कामिनि विद्यालक्ष्मि सदा पालय माम्॥ ७ ॥

धिमिधिमि धिन्धिमि धिन्धिमि धिन्धिमि दुन्दुभि नाद सुपूर्णमये
घुमघुम घुङ्घुम घुङ्घुम घुङ्घुम शङ्खनिनाद सुवाद्यनुते।
वेदपुराणेतिहास सुपूजित वैदिकमार्ग प्रदर्शयुते
जयजय हे मधुसूदन कामिनि धनलक्ष्मि रूपेण पालय माम्॥ ८ ॥

॥ इति श्री-अष्टलक्ष्मीस्तोत्रं समाप्तम् ॥